पाठ 2. ऐसे थे बापू

पाठ का परिचय

हमारा देश पहले गुलाम था। महात्मा गांधी ने देश को आज़ाद करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें हम प्यार से 'बापू' कहते हैं। एक बार एक बच्चा बापू से मिलने गया। उस समय बापू धोती पहने खड़े थे। बच्चे ने जानना चाहा कि बापू ने सिर्फ़ धोती ही क्यों पहनी है, कुर्ता क्यों नहीं। तब बापू ने उसे बताया कि बेटा मैं भारत माँ की संतान हूँ। मेरी इस धरती पर कई लोग ऐसे हैं जिनके पास तन ढकने को कपड़े नहीं हैं। जब उन लोगों के तन पर कपड़े आ जाएँ तभी मैं कुर्ता पहन सकता हूँ। मेरा देश गुलाम है। यहाँ लोगों के पास खाने को भोजन भी नहीं है। मैं सारे देश की चिंता करता हूँ। ऐसे में मैं कैसे कुर्ता पहन सकता हूँ। उस बच्चे पर इस बात का गहरा प्रभाव पड़ा और उसने बड़े होकर देश की सेवा करने का निश्चय किया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

मनुष्य को केवल अपने लिए ही नहीं जीना चाहिए। दूसरों के बारे में सोचने तथा समाज की सेवा करने की भावना हर किसी में होनी चाहिए। ईश्वर ने सभी को समान नहीं बनाया है। कोई अमीर है तो कोई गरीब। मन में सेवाभाव रखने से मनुष्य ऊँचा उठता है।

पाठ का वाचन

पहले पूरा पाठ स्वयं पढ़ें। बच्चों से थोड़ी-थोड़ी पंक्तियाँ पढ़वाएँ। बच्चों के उच्चारण पर ध्यान दें। कठिन शब्दों को सरल अर्थ में स्पष्ट करें। पूरे पाठ का भाव अंत में बच्चों को समझाएँ।

महत्वपूर्ण चर्चा

पाठ से संबंधित निम्नलिखित बिंदुओं पर बच्चों से चर्चा करें –

- क्या गांधी जी का नाम तुम सभी जानते हो?
- गांधी जी को हम क्यों याद करते हैं?
- गांधी जी ने कुर्ता न पहनने का जो कारण बताया वह उनकी किस भावना को प्रदर्शित करता है?
- तुम्हें देश से प्यार है, यह कैसे प्रदर्शित कर सकते हो?